

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Saturday, 26 September 2026

भारतीय ऐनीमेशन में नया युग : रामायण-महाभारत जैसे मिथकों को मिला आधुनिक तकनीक का जादुई रूप

Publisher

Published on 10 Sep 2025



भारतीय मनोरंजन जगत में इस समय एक नई लहर देखने को मिल रही है। लंबे समय तक हॉलीवुड के सुपरहीरोज और जापानी ऐनीमे का बोलबाला देखने के बाद अब भारत अपने मिथक-आधारित ऐनीमेशन के जरिए एक नया मुकाम हासिल कर रहा है। हाल ही में रिलीज़ हुई कुछ ऐनीमेशन फिल्मों ने यह साबित किया है कि रामायण और महाभारत जैसी महाकाव्य कथाएँ आधुनिक तकनीक के सहारे आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रभावशाली हैं।

भारतीय दर्शकों की धार्मिक और सांस्कृतिक जुड़ाव को देखते हुए रामायण और महाभारत पर आधारित ऐनीमेशन फिल्मों ने हमेशा ही आकर्षण पैदा किया है। लेकिन पहले इन फिल्मों की गुणवत्ता और तकनीकी स्तर सीमित रहा करता था।

अब कंप्यूटर जनरेटेड इमेजरी (CGI), मोशन कैप्चर और एडवांस्ड विज़ुअल इफेक्ट्स (VFX) के सहारे इन महाकाव्यों को एक भव्य और यथार्थवादी रूप दिया जा रहा है।

उदाहरण के तौर पर हाल में आई एक ऐनीमेशन फिल्म में रामायण का लंका युद्ध इतनी बारीकी से दिखाया गया कि दर्शकों ने इसे हॉलीवुड स्तर का अनुभव बताया। वहीं महाभारत के [?] के दृश्य इतने जीवंत प्रतीत हुए कि दर्शकों ने इसे “महाकाव्य का आधुनिक संस्करण” करार दिया।

आज भारतीय ऐनीमेशन कंपनियाँ अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीक का उपयोग कर रही हैं। 3D मॉडलिंग और हाई-रेज़ोल्यूशन ग्राफिक्स ने किरदारों को वास्तविकता के करीब ला दिया है। साउंड डिजाइन और बैकग्राउंड स्कोर ने कहानियों को और भी जीवंत बना दिया है। दर्शकों को ऐसा लगता है जैसे वे सिर्फ फिल्म नहीं देख रहे बल्कि इतिहास को जी रहे हैं।

भारतीय ऐनीमेशन उद्योग अब सिर्फ घरेलू दर्शकों तक सीमित नहीं रहा। रामायण और महाभारत पर आधारित नई फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल्स में भी अपनी जगह बनाई है।

विदेशी दर्शकों के लिए ये फिल्में न सिर्फ **मनोरंजन का माध्यम** हैं बल्कि **भारतीय संस्कृति और दर्शन** को समझने का भी अवसर हैं।

मिथक-आधारित ऐनीमेशन की सफलता ने भारतीय फिल्म इंडस्ट्री को कई नए अवसर दिए हैं। **OTT प्लेटफॉर्म** पर पौराणिक ऐनीमेशन सीरीज़ की मांग बढ़ गई है। बच्चों और युवाओं में इन कहानियों को लेकर नई जिज्ञासा पैदा हुई है। फिल्म निर्माताओं और तकनीकी कलाकारों को वैश्विक स्तर पर काम करने के मौके मिल रहे हैं।

फिल्म समीक्षकों का मानना है कि मिथक-आधारित ऐनीमेशन भारत के लिए **संस्कृति और तकनीक का अनोखा संगम** है। एक प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक के शब्दों में—

“रामायण और महाभारत केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि इनमें गहन जीवन-दर्शन और नैतिक शिक्षा छिपी है। जब इन्हें आधुनिक ऐनीमेशन तकनीक से प्रस्तुत किया जाता है, तो यह आने वाली पीढ़ियों तक इन मूल्यों को पहुँचाने का सबसे प्रभावी तरीका बन जाता है।”

हालांकि, इस उभरते दौर में कुछ चुनौतियाँ भी सामने हैं।

- **उच्च उत्पादन लागत** – गुणवत्तापूर्ण ऐनीमेशन बनाने में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं।
- **सांस्कृतिक संवेदनशीलता** – धार्मिक भावनाओं से जुड़ी कहानियों को चित्रित करते समय रचनाकारों को बेहद सतर्क रहना पड़ता है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा** – हॉलीवुड और जापान के ऐनीमेशन उद्योग से मुकाबला आसान नहीं है।

भारतीय ऐनीमेशन उद्योग तेजी से आगे बढ़ रहा है और आने वाले वर्षों में यह दुनिया की बड़ी ऐनीमेशन ताकतों में गिना जा सकता है। भारतीय पौराणिक कथाओं पर आधारित **वेब सीरीज़ और गेमिंग** प्रोजेक्ट्स पहले से विकासाधीन हैं। शिक्षा और बच्चों की सामग्री में भी **मिथक-आधारित ऐनीमेशन** का इस्तेमाल बढ़ रहा है।

भारतीय ऐनीमेशन उद्योग एक **नए स्वर्ण युग** की ओर बढ़ रहा है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य जब आधुनिक तकनीक से जीवंत होते हैं, तो न सिर्फ दर्शकों को मनोरंजन मिलता है बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ते हैं।

यह उम्मीद की जा रही है कि आने वाले समय में भारतीय मिथक-आधारित ऐनीमेशन न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में **भारतीय संस्कृति का दूत** बनेगा।